अगस्त: 2025 वर्ष : 8 अंक : 11

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

“वनिता की ममता न हुई, सुत का न मुझे कुछ छोह हुआ,
ख्याति, सुयश, सम्मान, विभव का, त्योंही, कभी न मोह हुआ।
जीवन की क्या चहल-पहल है, इसे न मैंने पहचाना,
सेनापति के एक इशारे पर मिटना केवल जाना।”

रामधारी सिंह दिनकर की कविता “सिपाही” से साभार

सर्वप्रथम आप सभी को 79वें स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ...

संस्थान का मासिक समाचार, अगस्त 2025 आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस अंक में संस्थान के जुलाई, 2025 की गतिविधियों को दिखाया गया है।

अगस्त का महीना हम सभी भारतवासियों के लिए एक विशेष महत्व रखता है। यह विशेष माह हमें स्वाधीनता दिवस की याद दिलाता है और एक विशेष अनुभूति से भर देता है जिसमे जोश, राष्ट्रीय भावना, देश के प्रति एक संकल्प, आपसी भाईचारा और सौहार्द आदि शामिल हैं।

संस्थान में 10 जुलाई 2025 को ‘राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस’ मनाया गया। भारत सरकार के केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री डॉ. सुकांत मजूमदार इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर लगभग 100 किसानों ने भाग लिया तथा संस्थान ने देश भर से नामांकित सफल मत्स्य पालकों को सम्मानित किया। इसके अलावा संस्थान ने 12 से 14 जुलाई 2025 के दौरान प्रोफेशनल फिशरीज ग्रेजुएट फोरम (पीएफजीएफ), फिशरीज कॉलेज, ओयूएटी, बरहमपुर; इनलैंड फिशरीज सोसायटी ऑफ इंडिया (आईसीएआर-सीआईएफआरआई) और ओडिशा फिशरीज कॉलेज एलुमनी एसोसिएशन, रेंगाईलुंडा (ओएफसीएआर) के सहयोग से "भारत में मत्स्य पालन और एक्वाकल्चर में ब्लू ट्रांसफॉर्मेशन की परिकल्पना" विषय पर द्वितीय इंडियन फिशरीज आउटलुक 2025 का आयोजन कॉलेज ऑफ फिशरीज, ओयूएटी, बरहमपुर, ओडिशा में किया।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

आईसीएआर-सीआईएफआरआई को आईआईटी बॉम्बे में राष्ट्रीय जियोस्पैशियल प्रैक्टिशनर अवार्ड 2025 प्राप्त

आईसीएआर-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई), बैरकपुर को आईआईटी बॉम्बे में आयोजित ओपन सोर्स जीआईएस दिवस के अवसर पर **राष्ट्रीय जियोस्पैशियल प्रैक्टिशनर अवार्ड 2025** से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास को पद्मश्री डॉ. ए.एस. किरण कुमार, पूर्व अध्यक्ष, इसरो ने प्रदान किया।

संस्थान को अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान एवं पर्यावरणीय निगरानी में ओपन-सोर्स जियोस्पैशियल प्रौद्योगिकियों के अभिनव उपयोग और नेतृत्व के लिए यह सम्मान मिला। पिछले दो दशकों में सीआईएफआरआई ने QGIS, R, Python, Google Earth Engine जैसे ओपन-सोर्स टूल्स से जलाशयों और नदियों का मानचित्रण, मत्स्य उत्पादन आंकड़ों का विश्लेषण और वॉटर बॉडी इन्फॉर्मेशन सिस्टम जैसे डिजिटल उपकरण विकसित किए हैं।

स्थान छोटे जलाशयों और जलीय वनस्पतियों के ड्रोन-आधारित मानचित्रण में भी अग्रणी है, जिससे उत्पादन में सुधार और जलीय खरपतवार प्रबंधन संभव हुआ है। ओपन साइंस को और आगे बढ़ाते हुए, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने R-Shiny, GeoServer और Linux Debian servers जैसे प्लेटफार्मों का उपयोग कर अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र के लिए एक राष्ट्रीय-स्तरीय ऑनलाइन जियोस्पैशियल प्रणाली विकसित की है। अपने शोध के माध्यम से, संस्थान ने 20 राज्यों में अंतर्स्थलीय जलाशयों का मानचित्रण किया है और वॉटर बॉडी इन्फॉर्मेशन सिस्टम सहित कई डिजिटल उपकरण विकसित किए हैं।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई में अत्याधुनिक भू-आकंड़ीय अनुसंधान (Geostatistical Research) में Bayesian kriging के जरिए मछली प्रजातियों की विविधता, residual kriging से प्लवक गतिकी (plankton dynamics), तथा जलाशयों के विस्तार और मुहाना क्षेत्रों में हिल्सा मत्स्य भविष्यवाणी हेतु spatio-temporal models का विकास शामिल है।

यह उपलब्धि सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य विकास हेतु संस्थान की प्रतिबद्धता और राष्ट्रीय नेतृत्व का प्रमाण है।

राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस 2025 पर प्रगतिशील मत्स्य किसानों का सम्मान

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीआईएफ़आरआई), बैरकपुर ने 10 जुलाई को अपने मुख्यालय में राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस 2025 को बड़े उत्साह के साथ मनाया। यह दिन 10 जुलाई 1957 को अंगुल फिश फार्म, कटक में प्रो. हीरालाल चौधुरी और उनकी टीम द्वारा विकसित प्रेरित प्रजनन तकनीक की ऐतिहासिक सफलता की याद में मनाया जाता है। उस समय यह उपलब्धि केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान केंद्र (अब आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई) के माध्यम से हुई थी—एक ऐसा नवाचार जिसने भारत की पहली "नीली क्रांति" का मार्ग प्रशस्त किया।

कार्यक्रम में माननीय मुख्य अतिथि डॉ. सुकांत मजूमदार, केंद्रीय शिक्षा एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास राज्य मंत्री, भारत सरकार उपस्थित रहे। साथ ही सम्मानित अतिथियों में डॉ. रविशंकर सी. एन., पूर्व निदेशक एवं कुलपति, आईसीएआर-सीआईएफ़ई, मुंबई तथा प्रो. कल्लोल पॉल, कुलपति, कल्याणी विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल शामिल थे। इस अवसर पर 120 मछुआरे एवं किसान (जिनमें 27 महिलाएँ थीं), उद्यमी, शोधकर्ता और एनजीओ प्रतिनिधि शामिल हुए।

आठ राज्यों—पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, असम, केरल, कर्नाटक, गुजरात और उत्तर प्रदेश—के 17 प्रगतिशील मत्स्य किसानों (जिनमें चार महिलाएँ भी शामिल थीं) को अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर माननीय मंत्री ने

आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई की कुछ प्रकाशन एवं उत्पाद भी जारी किए। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल की दो आर्द्रभूमियों के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए।

अपने संबोधन में डॉ. मजूमदार ने मत्स्य किसानों से आग्रह किया कि वे सीआईएफ़आरआई द्वारा विकसित आधुनिक तकनीकों को अपनाएँ और प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) जैसी का लाभ उठाकर मत्स्य उत्पादन बढ़ाएँ। उन्होंने विज्ञान-आधारित पद्धतियों की महत्ता पर बल दिया, जिससे मत्स्य क्षेत्र भारत की आर्थिक एवं पोषण सुरक्षा का आधार बन सके।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर -सीआईएफ़आरआई ने संस्थान के चल रहे शोध कार्यों पर प्रकाश डाला, जिनमें जलाशयों और आर्द्रभूमियों की उत्पादकता में सुधार, नदियों का पुनर्स्थापन, सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की प्राप्ति और पर्यावरणीय प्रवाह आवश्यकताएँ शामिल हैं। उन्होंने पुरस्कृत किसानों से आग्रह किया कि वे अपने अनुभव अन्य हितधारकों के साथ साझा करें, जिससे ग्रामीण आजीविका को सशक्त किया जा सके। डॉ. दास ने यह भी बताया कि वर्तमान में संस्थान का मुख्य ध्यान मध्यम और बड़े जलाशयों

एवं आर्द्रभूमियों में उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने तथा प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के अंतर्गत खुले जल मत्स्य पालन के लिए नदियों

के पुनर्स्थापन और पर्यावरणीय प्रवाह प्रोटोकॉल पर केंद्रित है।

भारत का मत्स्य क्षेत्र वर्तमान में तीव्र गति से प्रगति कर रहा है। वर्ष 2024–25 में रिकॉर्ड 18.42 मिलियन टन उत्पादन हुआ, जबकि 1950–51 में यह मात्र 0.7 मिलियन टन था। इस उपलब्धि ने भारत को विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मत्स्य उत्पादक देश बना दिया है। यह क्षेत्र राष्ट्रीय जीडीपी में लगभग 1.09% और कृषि जीडीपी में 7% से अधिक का योगदान करता है तथा 22 मिलियन टन उत्पादन के लक्ष्य के साथ "दूसरी नीली क्रांति" की ओर आत्मविश्वास से अग्रसर है। भारत के विशाल और विविध जल संसाधन—नदियाँ (29,000 किमी), मुहाने (2,00,000 हेक्टेयर), आर्द्रभूमियाँ (3,50,000 हेक्टेयर) और तालाब (22,00,000 हेक्टेयर)—मछली उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने की अपार संभावनाएँ प्रस्तुत करते हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रो. हीरालाल चौधुरी को पुष्पांजलि अर्पित करने से हुई और यह मछुआरों, वैज्ञानिकों, उद्यमियों और नीतिनिर्माताओं के बीच संवाद का एक मंच बना। इस उत्सव ने "विकसित भारत" के राष्ट्रीय लक्ष्य के अनुरूप समृद्ध अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र की सामूहिक दृष्टि को और मजबूत किया।

आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई, बेंगलुरु क्षेत्रीय केंद्र ने राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस मनाया

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीआईएफ़आरआई), बेंगलुरु क्षेत्रीय केंद्र ने राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस (एनएफ़एफ़डी) मनाया। इस कार्यक्रम का आयोजन आईसीएआर-सीआईएफ़ए, बेंगलुरु आरआरसी; मत्स्य पालन विभाग, कर्नाटक; केवीएएफ़एसयू; यूएएस, बेंगलुरु और सीओएफ़पीएए, बेंगलुरु चैप्टर के सहयोग से, आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई के निदेशक डॉ. बसंता कुमार दास के मार्गदर्शन में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत हेसरघट्टा झील, बेंगलुरु में हाइप्सेलोबार्बस कार्नाटिकस और लाबेओ फिम्ब्रिएटस मछलियों के बीज छोड़ने से हुई, जो कि झील के मत्स्य भंडार को बढ़ाने की आईसीएआर - सीआईएफ़आरआई की पहल है।

डॉ. एल. नरसिम्हा मूर्ति, प्रमुख एवं प्रधान वैज्ञानिक, बेंगलुरु क्षेत्रीय केंद्र, आईसीएआर - सीआईएफ़आरआई ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन डॉ. सी. वासुदेवप्पा, पूर्व कुलपति, निफ़्टेम, केएसएनयूएएचएस एवं पूर्व मुख्य कार्यकारी, एनएफ़डीबी ने अन्य विशिष्ट अतिथियों के साथ एच. कार्नाटिकस (कर्नाटक की राज्य मछली) के बीज छोड़कर किया।

अपने उद्घाटन संबोधन में डॉ. वासुदेवप्पा ने इस दिन के महत्व और प्रो. हीरालाल चौधरी एवं डॉ. के. एच. अलीकुन्ही द्वारा विकसित प्रेरित प्रजनन तकनीक पर प्रकाश डाला। अतिथि विशेष श्री दिनेशकुमार कल्लेर, निदेशक, मत्स्य पालन विभाग, कर्नाटक सरकार ने राज्य में मत्स्य पालन के सतत विकास हेतु मत्स्य किसानों के सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. सी. वी. मोहन, पूर्व प्रधान वैज्ञानिक, वर्ल्डफिश सीजीआईएआर ने कुपोषण उन्मूलन में देशी मछलियों के पोषण संबंधी लाभों पर प्रकाश डाला।

लगभग 250 किसान इस कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई ने रमनगरा जिले की श्रीमती सरस्वथम्मा और मैसूर जिले के श्री गंगाधर को सम्मानित किया, जो केंद्र की क्षेत्रीय गतिविधियों से लंबे समय से जुड़े हैं। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. गंगाधर बरलया, वैज्ञानिक प्रभारी, आरआरसी, आईसीएआर-सीआईएफ़ए ने देशी मछली प्रजातियों के महत्व एवं संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री विष्णनाथ टी. एस., उपनिदेशक, मत्स्य पालन विभाग, कर्नाटक सरकार ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

दोपहर बाद आयोजित विशेषज्ञ–किसान संवाद में मत्स्य क्षेत्र की ज्वलंत समस्याओं पर चर्चा हुई। विशेषज्ञ पैनल में डॉ. सी. के. मूर्ति, श्री डी. कल्लेर, डॉ. सी. वी. मोहन, डॉ. एल. नरसिम्हा मूर्ति, डॉ. वाई. बसवराजु, डॉ. एन. आर. रामकृष्ण और डॉ. शिवकुमार एम. शामिल थे।

चर्चा के दौरान आक्रामक प्रजातियों का प्रभाव, विनाशकारी मत्स्य पकड़, मछलियों की बीमारियाँ, गुणवत्तापूर्ण बीज और सस्ता एवं गुणवत्तापूर्ण आहार उपलब्धता जैसे मुद्दे सामने आए।मछुआरों ने भी चिंता व्यक्त की कि नदियों से महसीर और अन्य देशी मछलियाँ लुप्त हो रही हैं। मत्स्य फार्मों में ऐंकर वर्म रोग और विभिन्न खुले जलाशयों की खराब जल गुणवत्ता के मुद्दे भी उठाए गए।

डॉ. एल. एन. मूर्ति ने आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई द्वारा विकसित विभिन्न उत्पादों और तकनीकों का उल्लेख किया, जो मत्स्य किसानों को आजीविका सुधारने और क्षेत्र में सतत विकास सुनिश्चित करने में मदद करेंगे। उन्होंने प्राकृतिक जलाशयों में विदेशी और आक्रामक मछली प्रजातियों की बढ़ती घटनाओं, प्रभाव मूल्यांकन अध्ययन की आवश्यकता और देशी मछलियों के संरक्षण के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

देशी मत्स्य भंडार को बढ़ाने के लिए विशेषज्ञों ने सुझाव दिया कि संबंधित जनसंख्या अध्ययन के बाद जलाशयों और नदियों में देशी मछलियों का संचयन और रैंचिंग किया जाए। जैव विविधता पर कई जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने का भी सुझाव दिया गया।

डॉ. एल. एन. मूर्ति, केंद्र प्रमुख ने आश्वासन दिया कि आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई, बेंगलुरु क्षेत्रीय केंद्र अंतर्स्थलीय खुले जलाशयों के मछुआरों और अन्य हितधारकों के साथ सहयोग जारी रखेगा, जिससे इस क्षेत्र का और अधिक विकास हो सके।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के तहत हिलसा संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान ने 'इलिश उत्सव' का आयोजन किया

ICAR–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (CIFRI), बैरकपुर ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG) के सहयोग से 4 से 6 जुलाई, 2025 तक इलिश उत्सव का जीवंत आयोजन किया। इस आयोजन का उद्देश्य प्रतिष्ठित हिलसा (इलिश)—जो बंगाल की समृद्ध पाक परंपरा और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है—को सम्मानित करना था।

यह एक दिवसीय महोत्सव वैज्ञानिकों, रसोइयों, नीति-निर्माताओं, मछुआरों और आम जनता को एक मंच पर लेकर आया। इसमें हिलसा के मौसमी आगमन का उत्सव मनाने के साथ-साथ सतत मत्स्य पालन और अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान पर विशेष ध्यान दिया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान, मत्स्य विभाग और स्थानीय प्रशासन के गणमान्य व्यक्तियों ने किया। 4 जुलाई, 2025 को पश्चिम बंगाल सरकार के मत्स्य मंत्री श्री बिप्लब रॉय चौधरी ने भोजन और प्रदर्शनी स्टॉलों का उद्घाटन कर महोत्सव का शुभारंभ किया।

इस आयोजन का मुख्य आकर्षण पाक कला प्रदर्शनी रही, जिसमें पारंपरिक और कम प्रचलित हिलसा व्यंजनों को पुनर्जीवित किया गया।

सरसों इलिश, भापा इलिश, इलिश पातुरी और इलिश बिरयानी जैसे प्रसिद्ध व्यंजनों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। ये केवल स्वादिष्ट पकवान ही नहीं बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही पाक विरासत का सम्मान भी थे।

उत्सव में संस्थान के विशेषज्ञों द्वारा वैज्ञानिक सत्र भी आयोजित किए गए, जिनमें हिलसा की प्रव्रजन (migration), प्रजनन और संरक्षण रणनीतियों पर चर्चा हुई। हिलसा की किस्मों, पारंपरिक मछली पकड़ने के उपकरणों और संरक्षण तकनीकों की प्रदर्शनी ने आगंतुकों को इसकी पारिस्थितिकीय महत्ता से अवगत कराया।

लोक संगीत और नृत्य ने कार्यक्रम को और जीवंत बना दिया, जो बंगाल की नदी-आधारित परंपराओं को दर्शाते थे। विशेष बूथों में मछुआरों को वैज्ञानिकों से बातचीत करने, सतत तकनीकें सीखने और प्रशिक्षण अवसरों की जानकारी लेने का अवसर मिला। CI-FRI ने पर्यावरण अनुकूल प्रथाओं, प्रजनन चक्रों की जागरूकता और मूल्यवर्धित हिलसा उत्पादों को बढ़ावा देने पर भी जोर दिया ताकि मछुआरों की आजीविका सशक्त हो सके।

यह आयोजन NMCG के अंतर्गत ICAR-CIFRI की निरंतर गतिविधियों का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य जन-जागरूकता बढ़ाना और जलीय जैव विविधता संरक्षण में सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करना है।

इलिश उत्सव 2025 केवल एक उत्सव नहीं बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण, वैज्ञानिक संवाद और सामुदायिक सशक्तिकरण का मंच बन गया। इसमें हिलसा की पारिस्थितिकीय महत्ता को गहराई से समझने के साथ-साथ बंगाल की समृद्ध पाक परंपरा के प्रति गौरव और nostalgia को भी पुनर्जीवित किया गया। इस कार्यक्रम में छात्रों सहित 450 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

इस अवसर पर ICAR-CIFRI ने फिर से अपनी प्रतिबद्धता जताई कि वह जलीय जैव विविधता संरक्षण, सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन को बढ़ावा देने और नदी-आधारित आजीविका पर निर्भर लोगों के जीवन

सुधार के लिए निरंतर कार्य करता रहेगा। मंत्री ने कहा कि **"विज्ञान और परंपरा के इस संगम ने इलिश उत्सव को संस्कृति और संरक्षण के बीच तालमेल का नया मानक बना दिया है। इस कार्यक्रम की परिकल्पना के लिए संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास सराहना के पात्र हैं,"**

सतत नीली प्रगति की दृष्टि के साथ द्वितीय भारतीय मत्स्य दृष्टिकोण संपन्न

द्वितीय इंडियन फिशरीज आउटलुक (IFO), जो राष्ट्रीय मत्स्य पंचांग की एक महत्वपूर्ण घटना है, 12 से 14 जुलाई 2025 तक ओडिशा विश्वविद्यालय ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी (OUAT) के मत्स्य महाविद्यालय, बेरहामपुर, ओडिशा में आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम प्रोफेशनल फिशरीज ग्रेजुएट्स फोरम (PFGF), इन्लैंड फिशरीज सोसाइटी ऑफ इंडिया (IFSI), ओडिशा फिशरीज कॉलेज एलुमनी एसोसिएशन, रंगेलुंडा (OFCAAR), आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई, OUAT, ओडिशा सरकार, नेशनल फिशरीज डेवलपमेंट बोर्ड (NFDB) और एशियन फिशरीज सोसाइटी-इंडियन ब्रांच द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। इस आयोजन ने देशभर के प्रमुख विशेषज्ञों, नीतिनिर्माताओं, शोधकर्ताओं, उद्योग पेशेवरों और छात्रों को एक मंच पर लाकर भारत के मत्स्य क्षेत्र में नवाचार रणनीतियों और उभरती चुनौतियों पर चर्चा की।

12 जुलाई को आयोजित उद्घाटन समारोह में माननीय अतिथि श्री गोकुलानंद मलिक, मत्स्य, एआरडी एवं एमएसएमई मंत्री, ओडिशा सरकार मुख्य अतिथि के रूप

में उपस्थित रहे। मंच पर अन्य गणमान्य अतिथियों में श्री सुरेश कुमार वशिष्ठ, प्रधान सचिव, FARD; प्रो. प्रभात कुमार राउल, कुलपति, OUAT; डॉ. जे. के. जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान एवं शिक्षा), आईसीएआर, नई दिल्ली; डॉ. बी. के. बेहरा, मुख्य कार्यकारी, NFDB एवं डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई और कार्यक्रम संयोजक शामिल थे। डॉ. दास ने सभा का स्वागत करते हुए भारतीय मत्स्य क्षेत्र में जारी "ब्लू ट्रांसफॉर्मेशन" पर विचार साझा किए और स्मारिका का विमोचन किया जिसमें मत्स्य विज्ञान के प्रतिष्ठित शोधकर्ताओं के 34 आलेख शामिल थे। मंत्री ने मत्स्य प्रौद्योगिकी और नवाचारों को दर्शाने वाली प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया।

तीन दिवसीय इस आयोजन ने राष्ट्रीय स्तर पर संवाद का जीवंत मंच प्रस्तुत किया। IFO में 376 से अधिक वैज्ञानिक सार प्रस्तुत हुए और सात प्रमुख विषयगत क्षेत्रों पर चर्चा हुई जिनमें उत्तरदायी मत्स्य पालन, जलवायु-अनुकूल जलीय कृषि, जलीय स्वास्थ्य, पश्च-फसल प्रौद्योगिकी, जलीय आहार, आनुवंशिकी और सामाजिक-आर्थिक विकास शामिल थे। आयोजन का एक प्रमुख

आकर्षण यंग फिशरीज टैलेंट अवार्ड (YFTA) रहा, जिसमें 30 नवोदित शोधकर्ताओं के कार्य प्रदर्शित हुए। यह युवाओं की भूमिका को उजागर करता है जो सतत मत्स्य पालन के भविष्य को आकार देंगे। पहले दिन का धन्यवाद ज्ञापन प्रो. एस. के. उदगत, डीन, मत्स्य महाविद्यालय ने प्रस्तुत किया।

दूसरे दिन तकनीकी सत्रों के साथ उच्च-स्तरीय पैनल चर्चा आयोजित हुई जिसमें अकादमिक जगत, सरकार और उद्योग से प्रतिनिधियों ने किसानों की उपस्थिति में भाग लिया। इस अवसर पर माननीय मंत्री श्री बिभूति भूषण जेना, वाणिज्य, परिवहन, इस्पात और खनन मंत्री, ओडिशा सरकार ने संबोधित करते हुए कृषि, मत्स्य और सहायक क्षेत्रों के बीच गहरी समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया ताकि आजीविका सुरक्षा और बाज़ार तक पहुंच को सुदृढ़ किया जा सके। अन्य पैनलिस्टों में प्रो. पी. के. राउल, कुलपति, OUAT; प्रो. प्रसांजीत मिश्रा, डीन, विस्तार शिक्षा, OUAT; डॉ. जे. के. जेना; डॉ. बी. के. बेहरा और मत्स्य एवं एआरडी विभाग, ओडिशा के वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे। चर्चाएँ सततता, संस्थागत सहयोग और लघु मत्स्यपालकों के लिए नीतिगत समर्थन पर केंद्रित रहीं। इस बैठक में 250 से अधिक किसान उपस्थित रहे और उन्होंने मछली पालन से संबंधित अपने प्रश्नों का समाधान पाया। लगभग 10 प्रमुख औद्योगिक विशेषज्ञों ने जलीय कृषि क्षेत्र के विकास में संभावनाओं और चुनौतियों पर विचार रखे।

अंतिम दिन तकनीकी सत्रों के साथ समापन समारोह हुआ जिसकी अध्यक्षता मुख्य अतिथि डॉ. के. के. लाल, निदेशक, आईसीएआर-केंद्रीय खारे पानी जलीय कृषि संस्थान (CIBA) ने की। इस अवसर पर प्रोफेशनल फिशरीज ग्रेजुएट्स फोरम (PFGF) और बंगाल की खाड़ी कार्यक्रम (BOBP) की पहल "Phrase4Change" को रेखांकित किया गया, जिसका उद्देश्य मछुआरों, छात्रों और पेशेवरों को प्रेरित करना है। इस अवसर पर मत्स्य विज्ञान और ग्रामीण विकास में असाधारण योगदान देने वाले व्यक्तियों को प्रतिष्ठित IFO पुरस्कार प्रदान किए गए। यह आयोजन आशावादी संदेश के साथ संपन्न हुआ, जिसमें विज्ञान, नवाचार और सामुदायिक भागीदारी पर आधारित भारत के मत्स्य क्षेत्र में सतत, समावेशी और जलवायु-लचीली प्रगति की साझा दृष्टि प्रस्तुत की गई। सांस्कृतिक संध्याओं ने ओडिशा की समृद्ध परंपरा की झलक प्रस्तुत की जिसमें लोकनृत्य और पारंपरिक व्यंजन शामिल रहे।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई, कोच्चि में 'अंतर्स्थलीय मुक्त जल में मत्स्य एवं पर्यावरणीय निगरानी उपकरणों' पर प्रशिक्षण सम्पन्न

आईसीएआर-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई), कोच्चि द्वारा 14–18 जुलाई, 2025 के दौरान "अंतर्स्थलीय मुक्त जल में मत्स्य एवं पर्यावरणीय निगरानी उपकरण" विषय पर हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों को अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन हेतु नवीनतम पारिस्थितिकीय अनुसंधान उपकरणों की जानकारी देना तथा व्यावहारिक कौशल विकसित करना था। कुल 17 प्रशिक्षुओं (12 महिलाएँ और 5 पुरुष) ने इसमें भाग लिया, जिनमें शोध सहयोगी, फील्ड सहायक एवं कॉलेज ऑफ फिशरीज जबलपुर, सेंट अल्बर्ट्स कॉलेज, कोच्चि और सेक्रेड हार्ट कॉलेज, कोच्चि के विद्यार्थी शामिल थे।

उद्घाटन सत्र में डॉ. ए. पी. दिनेश बाबू, प्रमुख वैज्ञानिक एवं प्रमुख, शेलफिश फिशरीज डिवीजन, आईसीएआर-सीएमएफआरआई, कोच्चि मुख्य अतिथि रहे। डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने अध्यक्षीय संबोधन दिया तथा डॉ. एल. नरसिम्हा मूर्ति, प्रमुख, बेंगलुरु क्षेत्रीय केंद्र ने प्रतिभागियों को संबोधित किया।

कार्यक्रम में वैज्ञानिकों ने जल गुणवत्ता मापन, अवसाद एवं प्लवक विश्लेषण, मत्स्य पहचान (आकृति व आणविक तकनीक), ओटोलिथ अध्ययन, पोषण श्रृंखला मॉडलिंग (ECOPATH), जैव विविधता आकलन (PAST सॉफ्टवेयर), तथा जलीय स्वास्थ्य हेतु सूक्ष्मजीवी संकेतकों जैसे विषयों पर प्रशिक्षण दिया। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण की प्रासंगिकता एवं व्यावहारिक सत्रों की सराहना की, विशेषकर फील्ड सैंपलिंग को अत्यंत उपयोगी बताया। यह प्रशिक्षण डॉ. बि. के. दास (संयोजक) के मार्गदर्शन में डॉ. दीपा सुधीसन, डॉ. थैंकम थेरेसा पॉल एवं श्रीमती तनुजा अब्दुल्ला के समन्वय से सम्पन्न हुआ। श्री पी. वी. शाजिल ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

'अंतर्स्थलीय मत्स्य एवं उनके प्रबंधन' पर बी.एससी. प्राणीशास्त्र विद्यार्थियों हेतु शिक्षण कार्यक्रम

भारत जैसे देश में, जहाँ प्रचुर मात्रा में अंतर्स्थलीय जल संसाधन उपलब्ध हैं, अंतर्स्थलीय मत्स्य भोजन सुरक्षा, आजीविका सृजन और पारिस्थितिक संतुलन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सतत् मत्स्यपालन और जिम्मेदार मत्स्य प्रबंधन पर बढ़ते जोर को देखते हुए भावी पेशेवरों को इस क्षेत्र में आवश्यक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल उपलब्ध कराना आवश्यक है।

इसी पृष्ठभूमि में आईसीएआर–केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई), बैरकपुर, कोलकाता ने 22 जुलाई 2025 को "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। यह कार्यशाला सेरामपुर कॉलेज के बी.एससी. (प्राणीशास्त्र) छात्रों को अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों के वैज्ञानिक, पारिस्थितिकीय और व्यावहारिक पहलुओं से अवगत कराने के उद्देश्य से आयोजित की गई।

कार्यशाला का शुभारंभ डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई के स्वागत भाषण से हुआ। उन्होंने नदियाँ, जलाशय, झीलें एवं आर्द्रभूमियों जैसे अंतर्स्थलीय संसाधनों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि ये मत्स्य जैवविविधता और ग्रामीण आजीविका में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। उन्होंने सटीक प्रजाति पहचान के लिए मत्स्य वर्गीकरण (Fish Taxonomy) के महत्व को भी रेखांकित किया।

डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक ने जल गुणवत्ता निगरानी के व्यावहारिक प्रदर्शन पर बल दिया और कक्षा को संवादात्मक बनाने का सुझाव दिया।

कुल 23 विद्यार्थी (बी.एससी. प्राणीशास्त्र, द्वितीय सेमेस्टर) एवं 2 संकाय सदस्य कार्यशाला में सम्मिलित हुए।

कार्यशाला में अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न आयामों पर चर्चा हुई, जिनमें मछली तालाब निर्माण एवं प्रबंधन, जलीय कृषि तकनीकें, सम्मिश्रित मत्स्य पालन, तालाबों में जल गुणवत्ता प्रबंधन, कार्प मछलियों का प्रेरित प्रजनन, वायुप्राणित एवं जीवित मत्स्य पालन, सीवेज आधारित मत्स्य पालन, पिंजरा एवं पेन संस्कृति आदि शामिल थे। केस स्टडी और क्षेत्रविशेष अनुभवों से विद्यार्थियों की समझ को और समृद्ध किया गया।

प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए। छात्रों ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि कार्यशाला ज्ञानवर्धक, संवादात्मक एवं सुव्यवस्थित रही।

कार्यशाला का सफल आयोजन डॉ. अपर्णा रॉय (वरिष्ठ वैज्ञानिक), डॉ. दिबाकर भकता (वरिष्ठ वैज्ञानिक) एवं प्रणब गोगोई (वैज्ञानिक) के समन्वय में हुआ। इसमें श्री सुजीत चौधरी, श्री मनबेंद्र रॉय एवं डॉ. अभिषेक साहा (STA) ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

सीआईएफ़आरआई प्रशिक्षण कार्यशाला में ओडिशा मत्स्य अधिकारियों को तकनीकी जानकारी

आईसीएआर-सीआईएफ़आरआई, बैरकपुर ने 21–25 जुलाई 2025 तक ओडिशा सरकार के मत्स्य विभाग के अधिकारियों के लिए पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें कुल 29 अधिकारी (15 महिला अधिकारी सहित) शामिल हुए। प्रशिक्षण का उद्देश्य अंतर्देशीय मत्स्य प्रबंधन, मछली रोग निदान, प्रयोगशाला परीक्षण, जल एवं मृदा गुणवत्ता, जलीय कृषि पद्धतियाँ, पेन कल्चर तथा मत्स्य क्षेत्र में जीआईएस अनुप्रयोगों पर ज्ञान और कौशल विकसित करना था। इस दौरान 11 कक्षाएँ, 2 प्रायोगिक सत्र और 2 क्षेत्र भ्रमण (जिसमें ईस्ट कोलकाता वेटलैंड शामिल था) आयोजित किए गए। निदेशक डॉ. बि.के. दास ने उद्घाटन सत्र में व्यावहारिक प्रशिक्षण और कौशल हस्तांतरण की महत्ता पर बल दिया। फीडबैक में 90% प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण को अत्यंत उपयोगी व करियर विकास हेतु लाभकारी बताया। समापन सत्र में डॉ. श्रीकांत समंता ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। प्रशिक्षण का सफल समन्वय डॉ. अपर्णा राय और डॉ. विकास कुमार ने किया।

“जैविक आँकड़ों के विश्लेषण हेतु आधारभूत सांख्यिकी में अवधारणा निर्माण” पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

आईसीएआर–सीआईएफ़आरआई, प्रयागराज ने 28–30 जुलाई, 2025 के दौरान “जैविक आँकड़ों के विश्लेषण हेतु आधारभूत सांख्यिकी में

अवधारणा निर्माण” विषय पर तीन दिवसीय ऑफलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण का उद्घाटन और समापन समारोह केंद्राध्यक्ष डॉ. बी. आर. चव्हाण की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में कुल 15 प्रतिभागियों (11 छात्राएँ एवं 4 छात्र) ने उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों — प्रयागराज, बस्ती, गोरखपुर और कौशाम्बी से भाग लिया।

प्रशिक्षण में इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज; दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर; तथा चन्द्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के मत्स्य एवं सांख्यिकी जैसे विभिन्न विषयों के विद्यार्थी सम्मिलित हुए। डॉ. मलय नस्कर, डॉ. धर्म नाथ झा और डॉ. अनिल कुमार यादव ने विवरणात्मक सांख्यिकी, परिकल्पना परीक्षण, एएनओवा, काय-स्क्वायर परीक्षण, सहसंबंध एवं प्रतिगमन जैसे विषयों को विभिन्न सॉफ़्टवेयर (Excel, R, PAST और SPSS) की मदद से समझाया। प्रशिक्षण का समन्वय डॉ. धर्म नाथ झा, डॉ. वी. आर. ठाकुर और डॉ. विकास कुमार ने किया तथा श्री मनीष कुमार (टी-1) एवं केंद्र के अन्य कर्मचारियों ने सहयोग प्रदान किया।

सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

ICAR-CIFRI Honours Progressive Fish Farmers on National Fish Farmers Day 2025

CIFRI Conferred with National Geospatial Practitioner Award 2025 for Pioneering Use of Geospatial Tools in Fisheries Science

Government of India
Press Information Bureau

প্রাণী বিকাশ

জাতীয় মৎস্য চাষী দিবস পালিত সিফ্রিতে

2nd Indian Fisheries Outlook Concludes with a Vision for Sustainable Blue Future

तीन दिवसीय हिलसा महोत्सव की हुई शुरुआत

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बैरकपुर केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान केंद्र की ओर से हिलसा महोत्सव मनाया गया। इस मौके पर मत्स्य पालन मंत्री विप्लव राय चौधरी ने कहा कि राज्य मत्स्य विभाग हिलसा पालन पर विशेष ध्यान दे रहा है।

राज्य में मानसून के आगमन के साथ ही हिलसा बंगालियों का मुख्य भोजन बन जाता है। मत्स्य विभाग ने हिलसा उत्पादन पर अधिक जोर दिया है। चौधरी ने दावा किया कि उन्होंने प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया और प्रदर्शनी का निरीक्षण भी किया। उनके साथ बैरकपुर केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान केंद्र के निदेशक बसंत कुमार दास और अन्य अधिकारी भी थे।

मंत्री ने कहा, जिस तरह बांग्लादेश में हिलसा मछली पकड़ने पर तीन महीने का प्रतिबंध है, उसी तरह पश्चिम बंगाल में भी हिलसा मछली पकड़ने पर दो महीने का प्रतिबंध लगाया गया है, जिसके कारण हिलसा उत्पादन धीरे-धीरे बढ़ रहा है। बैरकपुर स्थित केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान केंद्र के निदेशक बसंत कुमार दास ने बताया कि हिलसा महोत्सव रविवार तक चलेगा।

আরো খবর

জাতীয় মৎস্য চাষি দিবস উদযাপন

AgroSpectrum

ICAR-CIFRI receives National Geospatial Practitioner Award 2025 at IIT Bombay

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है